हेनरी डेविड थोरो

प्रकृति का सहवासी

लेखक : कैथरीन रीफ

चित्रसज्जा : लैरी रेमण्ड

"प्रकृति का सम्पर्क जितना भी हो अपर्याप्त है।"

अध्याय १ : एक समुचित नर्सरी

अकेला, शोरगुल से भरे अपने परिवार से दूर, एक बालक घर के छज्जे की खिड़की से बाहर निहार रहा था। घर के पिछवाड़े बने पक्षीघर के आस-पास कुछ अबाबीलें तेज़ी से उड़कर इधर से उधर जा रही थीं और अपने घोंसले बनाने में जुटी थीं। वसंत ऋतु आ चुकी थी, और ये काले-नीले पक्षी दक्षिण अमेरिका में गर्मी का मौसम गुजारने के बाद कुछ दिन पहले ही मेसाचुसेट्स लौटे थे।

हफ्ते का कोई और दिन होता तो यह नन्हा बालक हेनरी डेविड थोरो अपने घर के बाहर इन अबाबीलों की तरह ही आज़ाद घूम रहा होता। लेकिन रविवार के दिन उसे घर के बाहर खेलने की अनुमति नहीं थी।

वह सन १८२० का समय था, और रविवार, यानि सैबथ का दिन, केवल और केवल प्रार्थना और ईश्वर-मनन के लिए निश्चित था। कठिन परिश्रम करने वाले न्यू-इंग्लैंड निवासियों के लिए यह एक दिन की छुट्टी और आराम का समय था, जिसके बाद पुनः पूरे हफ्ते उन्हें अपनी खेती-बाड़ी, कारोबार या घरेलू काम काज में जुट जाना था। रविवार के दिन बच्चों को भी सैबथ का पालन करते हुए अपनी किताबों और खिलौनों से दूर रहना होता था।

उस दोपहर, जब हेनरी खिड़की से बाहर का दृश्य निहार रहा था, उसे एक बाज़ उड़ता हुआ दिखाई दिया। उस बालक की पैनी सलेटी आँखें ऊँचाई पर उड़ रहे उस बाज़ का पीछा करने लगीं। एक क्षण के लिए हेनरी यह भूल ही गया कि वह घर के अंदर बंद है। उसका मन भी उस बाज़ की तरह आकाश की ऊंचाइयों में उड़ने लगा। बाज़ कॉन्कॉर्ड मेसाचुसेट्स की ऊंची इमारतों की छतों पर मंडरा रहा था, जहां के सारे बाजार व दुकानें पूरी तरह बंद थीं। उसकी परछांई पत्थर की चहारदीवारी से घिरे खेत खलिहानों पर साफ़ दिखाई दे रही थी।

उन दुकानों और खेतों के आगे थे खुले जंगल और कॉन्कॉर्ड नदी का हरा भरा किनारा। हेनरी अक्सर ही इन किनारों पर खड़े होकर मंद-मंद बहते नदी के जल को निहारता। बाद में उसने इसे इस प्रकार लिखा था : "नदी की तलहटी में लहलहाती दूब, मानो पानी की लहरें उसे पवन के झोंकों की तरह सहला रही हों।" "कुछ पेड़ की छाल के टुकड़े, कुछ पौधों की टहनियां, और कभी कोई वृक्ष की शाखा, जल में मंद मंद बहती चली जा रही थी", जिसे देखना उसे बहुत अच्छा लगता था।

कॉन्कॉर्ड शहर के नज़दीक कई सरोवर भी थे, जिनका निर्माण १०००० वर्ष पहले तब हुआ था जब यहाँ विशालकाय हिमनद हुआ करते थे, जो बर्फ की एक सरकती दीवार की तरह थे। उन सरोवरों की सतह से प्रतिबिंबित होता सूर्य का प्रकाश उसे बहुत आकर्षित करता था। "मानो पृथ्वी की सतह पर माणिक बिछे हों", इस प्रकार उसने इस दृश्य का वर्णन किया था। कभी उसे प्रतीत होता था कि मानो वे प्रकाश के सरोवर हों।

हेनरी का सबसे प्रिय स्थान था वाल्डेन सरोवर। जब वह बहुत छोटा था, इस सुनसान जगह पर एकाकी, वह पेड़ों के बीच खड़ा इस सरोवर के दृश्य को निहारता रहता, और उसे ज़रा भी अकेलापन महसूस नहीं होता था। बल्कि उसे बड़ी शांति का अनुभव होता था, मानो वह स्वयं भी इस प्रकृति का हिस्सा हो। उसी अनुभव को स्मरण करके उसने लिखा था, "मेरी रूह को इसी एहसास की ज़रूरत थी।" सरोवर के चारों ओर सर उठाये खड़े चीड़ के वृक्षों के बीच उसे लगता मानो "मेरी आत्मा को सबसे उपयुक्त संवर्धन स्थल मिल गया हो। "
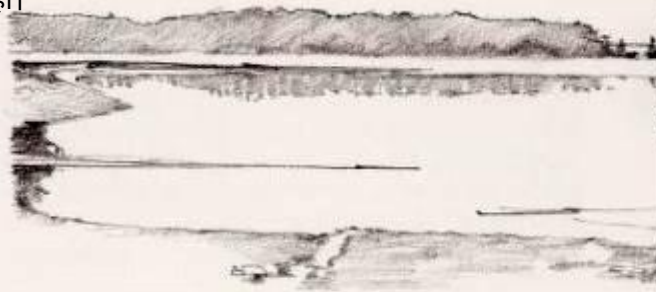
वयस्क होने के बाद हेनरी पुनः वाल्डेन सरोवर लौट कर आया, और दो वर्ष से भी अधिक समय तक, ४ जुलाई १८४५ से ६ सितम्बर १८४७ तक, सरोवर के तट पर एक कुटी बना कर वहां निवास किया।

हेनरी थोरो, वाल्डेन सरोवर को गया था एक शांत और सादा जीवन जीने के लिये, एक ऐसी ज़िन्दगी जो "तफसीलियों में उलझी न हो।" उसे उम्मीद थी कि ज़िन्दगी का सही मतलब वह तब ही समझ पायेगा जब उसका वक़्त रोज़मर्रा के कामकाजी मसलों में ज़ाया न हो।

अपने इस अनुभव पर लिखी उसकी पुस्तक "वाल्डेन" ने बहुत से लोगों की अपने-अपने जीवन के विषय में सोचने और उसे बदलने में सहायता की है। इस पुस्तक ने लोगों को प्रकृति का मोल समझाया है और उसके संरक्षण की प्रेरणा दी है। कॉन्कॉर्ड के इस लेखक ने जनता को समझाया कि प्रकृति से मिलने वाले शहतीरों, धातुओं या अन्य वस्तुओं से अधिक उन्हें स्वयं प्राकृतिक जगत का मूल्य समझना चाहिए। थोरो के अनुसार प्रकृति के बीच जाने से ही मन की शांति प्राप्त होती है, और स्वयं तो समझने की प्रेरणा मिलती है।

"प्रकृति का सेवन जितना किया जाये, कम है," उसने लिखा। "पनपते-मुरझाते वृक्षों से परिपूर्ण वन, गरजते बादल, हफ़्तों न रुकने वाली बरसातें", इन सभी प्राकृतिक परिस्थितियों में हेनरी थोरो स्वयं को अपने घर जैसा अंतरंग अनुभव करते थे। उन्हें लगता कि शहरों की भाग-दौड़ और भीड़-भड़क्के की ज़िन्दगी से दूर जाकर ही हम खोज पाएंगे कि जीवन में क्या है जो महत्वपूर्ण और चिरस्थायी है।

थोरो मानते थे कि इंसान भी प्रकृति का ही एक अंग हैं, और उनको वन्य पशुओं और पेड़ पौधों के साथ सामंजस्य का जीवन जीने की आवश्यकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि लोगों ने सावधानी नहीं बरती, तो वे प्राकृतिक साधनों को नष्ट कर देंगे, और उन्हें पुनर्जीवित करना असंभव होगा। "नदी और उसके झरने, घास के मैदान, सरोवर, पर्वत, चट्टानें, जंगल, और पेड़, ये सभी कितने सुन्दर हैं", थोरो ने कहा। "उनकी उपयोगिता रुपये-पैसे से नहीं तौली जा सकती।"

थोरो के इन शब्दों ने बहुत से व्यक्तियों को प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित किया। इन शब्दों ने अनेक लेखकों और कलाकारों को प्रकृति को अपना विषय चुनने के लिए प्रोत्साहित किया। फिर इन लोगों के प्रकृति-प्रेम ने दूसरों को भी इस ओर आकर्षित किया।

इन सभी लोगों का यह विश्वास है कि वे एक बहुमूल्य वस्तु की रक्षा के लिए कार्य कर रहे हैं, एक ऐसी वस्तु जो एक बार खो जाने पर दोबारा कभी नहीं मिल सकती। इन लोगों में अधिकांश को यह बोध हेनरी डेविड थोरो की पुस्तकें पढ़ने से हुआ है।

"मुझे कितनी प्रसन्नता मिलती थी जब मुझे स्कूल नहीं जाना होता था।"

अध्याय २ : एक अजीब छड़ी

जॉन और सिंथिया थोरो की तीसरी संतान का जन्म १२ जुलाई १८१७ को हुआ। अपने चाचा के नाम पर ही उसका भी नाम डेविड रखा गया। लेकिन हर कोई उस बालक को उसके मध्य-नाम हेनरी से पुकारता था। हेनरी की बड़ी बहन और भाई के नाम थे हेलेन और जॉन, और उसके एक छोटी बहन भी थी, सोफिया।

नन्हे हेनरी का पालन पोषण एक भरे पूरे परिवार में हुआ, जहाँ हर समय कुछ न कुछ कोलाहल रहता था। उसके परिवार के लोगों में रोज़मर्रा के मुद्दों पर खुल कर चर्चा होती थी। रात्रि के भोजन के समय वार्तालाप का विषय अक्सर होता था धर्म या राजनीति।

अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए उन्होंने कुछ मेहमान व किरायेदार भी रख लिए थे, जिससे घर में लोगों की संख्या और बढ़ गई। इन्हीं मेहमानों में एक थे हेनरी के चाचा चार्ल्स डनबर जो कि उसे बहुत अच्छे लगते थे। चाचा चार्ल्स की कुछ विचित्र आदतों में हेनरी को बहुत मज़ा आता था, जैसे कि रविवार का दिन घर के तहखाने में बिताना, या फिर दाढ़ी बनाते-बनाते अचानक सो जाना। चाचा चार्ल्स ने अपने लिए जिस तरह के रहन-सहन का चुनाव किया था, वह न्यू-इंग्लैंड के अधिकांश निवासियों से बहुत अलग था। लग कर काम करते रहने में उनकी बिलकुल रूचि न थी। नतीजन, वह थोड़े दिन थोरो-निवास में रहते, फिर चले जाते, और कुछ समय बाद फिर वापस आ जाते। कुछ हफ्ते कॉन्कॉर्ड में बिताने के बाद वह बिना किसी को बताये कहीं चल पड़ते, जैसे मेन (Maine) के समुद्र-तट की सैर करने, या फिर वर्मांट (Vermont) में फूस कतरने के लिए।

घर-बार सँभालने की जिम्मेदारी सिंथिया थोरो की थी। ऊर्जा से भरपूर, वह कठिन परिश्रम करती, और बड़ी किफ़ायत के साथ अपने इस विशाल परिवार का भरण-पोषण करती। किसी मित्र ने एक बार कहा, "यदि घर में डबल-रोटी के कुछ टुकड़े मात्र ही पड़े हों, तब भी वह उन्हें भली-भांति बना कर सबके लिए परोसती।"

हालाँकि थोरो परिवार एक-एक पैसे का ख्याल रखकर बड़ी किफ़ायत से रहता, लेकिन फिर भी वे अपने से कम संपन्न लोगों की मदद अवश्य करते थे। क्रिसमस और थैंक्सगिविंग के त्योहारों पर सिंथिया और जॉन अपने गरीब पड़ोसियों को थोरो परिवार के साथ भोजन करने के लिए अवश्य निमंत्रण देते। अन्य वंचित लोगों के लिए सिंथिया की सहानुभूति केवल कॉन्कॉर्ड के पड़ोसियों तक ही सीमित नहीं थी। उसका मत था कि नस्ल या राष्ट्रीयता के आधार पर कोई भी भेदभाव अनुचित है, और सभी इंसान एक बराबर हैं। सिंथिया अक्सर ही दृढ़ निश्चय के साथ सशक्त रूप से दास-प्रथा के विरुद्ध अपने विचार व्यक्त करती। उसने कॉन्कॉर्ड महिला दास-प्रथा-उन्मूलन सभा की भी स्थापना की।

जॉन थोरो (वरिष्ठ) बड़े विचारशील, ईमानदार और स्नेहशील व्यक्ति थे। वे लकड़ी की पेन्सिलें बनाने का काम करते थे, जिनका प्रयोग हाल ही में प्रारम्भ हुआ था। अपना काम निपटाने के बाद अक्सर कोई पुस्तक पढ़ने या संगीत सुनने में उन्हें आनंद आता था। वे अपनी प्रिय पुस्तकें हेनरी को भी पढ़ने के लिए देते। उन्होंने उसे बांसुरी बजाना भी सिखाया।

माता-पिता दोनों ही घर के बाहर प्रकृति के बीच रहना पसंद करते थे, और यह प्रकृति प्रेम उन्होंने अपनी संतानों को भी सिखाया। अनेक वृक्षों और नदियों के निकटवर्ती होने के कारण कॉन्कॉर्ड में यह कार्य बहुत सहज था। सभी परिवारजन वन में भ्रमण के लिए जाते, और वहां चूल्हा जलाकर स्वादिष्ट सूप बनाते। सिंथिया अक्सर बच्चों को घर के बाहर ले जाकर पक्षियों का चहचहाना सुनवाती।

लेकिन प्रकृति के अलावा भी कॉन्कॉर्ड में सीखने को बहुत कुछ था। दो हज़ार की आबादी वाले इस छोटे से शहर ने अमेरिका के इतिहास में अपना गौरवशाली स्थान बनाया था। क्रांति के युद्ध की एक शुरुआती मुठभेड़ यहीं हुई थी। ऐसा कहते हैं, कि उस युद्ध की तोपों की पहली गर्जन विश्व भर में सुनाई दी थी।

यहाँ के निवासी आज के नगर पर भी स्वाभिमान का अनुभव करते। जिले का मुख्य न्यायालय कॉन्कॉर्ड में ही स्थित था। बॉस्टन से आने-जाने वाली गाड़ियां रोज़ ही यहाँ रुकतीं, और यात्री यहाँ के होटलों में ठहरते और बाज़ारों में खरीदारी करते। बच्चों को कॉन्कॉर्ड नदी में आती-जाती विशाल नौकाओं को निहारने में बड़ा आनंद आता था। इन नौकाओं के नाविक कभी-कभी बच्चों को नाव पर भी बुला लेते।

लेकिन कॉन्कॉर्ड के बच्चों की शिक्षा की ज़िम्मेदारी इन नाविकों पर ही निर्भर नहीं थी। स्कूल में बच्चों से वयस्कों जैसे गंभीर आचरण की अपेक्षा की जाती थी, जैसे ठीक-प्रकार बैठना, और लम्बे समय तक ध्यानपूर्वक अपने अध्यापकों को सुनना।

शहर के सार्वजानिक स्कूल में सभी कक्षाओं में बच्चे बेंचों पर एक-साथ बैठते थे। हेनरी व अन्य बच्चे बाइबिल व शेक्सपियर के नाटकों के लम्बे-लम्बे अंश ज़बानी याद करते थे। जो लड़के-लड़कियां कक्षा में ध्यान नहीं देते थे, अध्यापक उन्हें छड़ी से पीट कर दण्डित किया करते थे।

जब वह ११ वर्ष का हुआ, हेनरी और उसके भाई जॉन ने एक निजी विद्यालय, कॉन्कॉर्ड अकादमी, में प्रवेश लिया। हेनरी ने अपनी पढाई में अच्छा प्रदर्शन किया। प्रकृति के प्रति अपने प्रारम्भिक प्रेम का प्रदर्शन उसने "ऋतुएं" ("The Seasons") नामक एक रचना में किया। इस रचना में उसने बदलती ऋतुओं के साथ प्रकृति में आने वाले दृश्यों और ध्वनियों का वर्णन किया था।

हेनरी ने लिखा कि वसंत ऋतु में "धरती नई घास के उगने से हरी-भरी हो जाती है। दक्षिण के देशों को चले गए पक्षी पुनः वापस आने लगते हैं, और सुबह-सवेरे अपनी मधुर चहचहाहट से हमें आनंदित करते हैं।" हेनरी ने ग्रीष्म ऋतु को "वर्ष का सबसे सुन्दर समय" वर्णित किया, जब पेड़-पौधे फूल-पत्तियों से भर जाते हैं, और उन पर लगे फल पकने लगते हैं।

जब पतझड़ आता है, "किसान ठन्डे मौसम की तैयारी में जुट जाते हैं, और बाज़ारों में फलों की भरमार दिखाई देती हैं।" पक्षी उड़ कर गर्म देशों की ओर जाने लगते हैं "क्योंकि वे भी जानते है, कि सर्दी अब आने ही वाली है।" और सर्दी की ऋतु में "कुछ भी दिखाई नहीं देता। सुबह-सवेरे चहचहा कर मन को प्रसन्न करने वाले पक्षी अब कहीं नज़र नहीं आते। अब केवल बर्फ पर फिसलने वाली गाड़ियों की घंटियां ही सुनाई देती हैं।"

प्रकृति में हो रहे बदलावों को देखने और जानने के हेनरी को अनेक अवसर मिले। उसे सबसे प्रिय लगता था जंगलों और चरागाहों में अकेले विचारना, बर्फ जमे तालाबों पर स्केटिंग करना, या रेड इंडियन लोगों के तीरों व अन्य औज़ारों को वन में खोजना। वयस्क होने पर उसने लिखा था, "मुझे स्मरण है कि मुझे कितनी ख़ुशी मिली थी जब मुझे स्कूल जाने के बजाय अकेले नजदीकी पहाड़ी से रात्रि-भोज के लिए फल एकत्र कर लाने के लिए कहा गया था।"

जैसे उसकी उम्र बढ़ी, हेनरी ने अनुभव किया कि अपने स्कूल के मित्रों के साथ खेलने-कूदने की अपेक्षा उसे प्रकृति का अन्वेषण कहीं अधिक रुचिकर लगता था। वह आसानी से नए मित्र नहीं बना पाता था, जबकि उसका भाई जॉन ऐसा सरलता से कर लेता था। दूसरे बच्चों ने उसका नाम जज-साहब रख दिया था, क्योंकि वह हमेशा बहुत गंभीर मुद्रा में रहता था। वे उसे अजीब छड़ी (odd stick) कह कर भी पुकारते थे।

लेकिन फिर भी कॉन्कॉर्ड के नौजवान हेनरी के प्रकृति-प्रेम की सराहना करते थे। वे प्रशंसा करते कि हेनरी को पानी या कीचड़-मिटटी के संपर्क से कोई संकोच नहीं है।

हेनरी की एक पहचान यह भी थी, कि उसे अपने हाथों से काम करना अच्छा लगता था, और वह इसमें कुशल भी था। उसे लकड़ी के टुकड़ों या बांस को तराश कर सीटी, कोई पशु-पक्षी या अन्य ऐसी वस्तुएं बनाना अच्छा लगता था। हथौड़े और कीलों के प्रयोग में तो वह इतना माहिर था, कि उसके परिवार वालों को लगता कि शायद बड़ा होकर वह एक अच्छा बढ़ई बनेगा।

सन १८३३ की ग्रीष्म ऋतु में, जब वह १६ वर्ष का था, हेनरी ने "रोवर" नाम की एक छोटी नौका बनाई। गर्मी की शांत दोपहरियों को वह अकेला इस नौका में लेट कर वाल्डेन सरोवर में तैरता रहता, और नीले आकाश को निहारता। कॉन्कॉर्ड शहर के उसके पडोसी यदि उसे इस अवस्था में देखते तो शायद उसे "आलसी हेनरी" की संज्ञा दे देते।

लेकिन विचारों में खोये हेनरी को ऐसा बिलकुल नहीं लगता कि वह अपना समय नष्ट कर रहा है। वह लोगों के विषय में सोचता रहता, अमेरिका के मूल-निवासियों के बारे में, और बाहर से आकर यहाँ बसने वालों के विषय में, जो कि उससे पहले इस सरोवर में आये होंगे, लेकिन इसे बिलकुल निर्मल और साफ़-सुथरा छोड़ गए। वह सोचता था कि सैंकड़ों सालों से "लोगों ने इसका जल पिया होगा, इसकी सुंदरता को सराहा होगा, और फिर आगे बढ़ गए, परन्तु इसका जल फिर भी पहले जैसा ही सुन्दर और उज्जवल है।"

"मैं शिक्षा-प्राप्ति को एक आनंददायी अनुभव बनाऊंगा।"

अध्याय ३ : प्रकृति का अपना बालक

सिंथिया थोरो हेनरी को भविष्य में एक बढ़ई बनता देखने को बिलकुल तैयार नहीं थी। उसके मन में अपने पुत्र के लिए अन्य योजनाएं थीं, वह उसे कॉलेज भेजना चाहती थी। इस प्रकार, ३० अगस्त १८३३ को हेनरी घर से १५ मील दूर कैंब्रिज मेसाचुसेट्स गया और वहां हार्वर्ड विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ।

हार्वर्ड में २५० विद्यार्थी थे, जो हफ्ते में ६ दिन व्यस्त रहकर पढाई में कड़ी मेहनत करते। सुबह-सवेरे कड़ी ठण्ड में कॉलेज के गिरिजाघर में प्रार्थना के बाद वे पूरा दिन लैटिन, ग्रीक, गणित, फ्रेंच इत्यादि विषयों का अध्ययन करते।

हेनरी हार्वर्ड में अन्य विद्यार्थियों से अधिक मित्रता नहीं कर पाया। कुछ छात्र कहते कि वह बिलकुल उदासीन है, जैसे उसे दूसरों से कोई सरोकार ही न हो। निश्चय ही, हेनरी अपने अकेलेपन में ही सहज महसूस करता था। वह चार्ल्स नदी के किनारे टहलता, या नज़दीक के खेतों में चला जाता। कॉलेज के एक सहपाठी ने उसे "प्रकृति का अपना बालक" की संज्ञा दी थी।

फिर जल्दी ही हेनरी हारवर्ड विश्विद्यालय के पुस्तकालय की ओर आकर्षित हुआ, जहाँ ५०००० से भी अधिक पुस्तकें थीं। एक गंभीर विद्यार्थी की तरह हेनरी घंटों वहां पढ़ता रहता, और जो कुछ उसे अच्छा लगता, अपनी नोटबुक में लिख लेता।

उसकी प्रिय पुस्तक थी कॉन्कॉर्ड के ही नागरिक राल्फ वाल्डो एमर्सन द्वारा लिखित "प्रकृति"। यह छोटी सी पुस्तक जैसे प्रकृति के प्रति हेनरी की अपनी भावनाओं को ही व्यक्त करती थी।

एमर्सन ने लिखा था कि व्यक्ति का मन सर्वप्रथम प्रकृति से ही प्रभावित होता है, जो कि सबसे अधिक अर्थपूर्ण भी है। "इसका न तो कोई आदि है, और न कोई अंत", प्रकृति के बारे में एमर्सन ने लिखा। उसने पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों से सजी प्रकृति को "ईश्वर के ताने-बाने" की संज्ञा दी। एमर्सन का मत था कि प्रकृति का अनुसरण लोगों को एक अधिक आध्यात्मिक जीवन की ओर ले जा सकता है।

प्रकृति के बीच लोग रोज़मर्रा के झंझटों से दूर जाकर संसार को एक नई दृष्टि से देख सकते हैं। एमर्सन ने कहा कि प्रकृति के बीच समय बिताकर ही लोग रोज़ाना के कामकाज और चिंताओं से मुक्त हो इस संसार की सुंदरता को देख-समझ पाएंगे। भोर के सूरज की किरणें, एक बच्चे की हंसी, या ग्रीष्म ऋतु की वर्षा, इन सभी साधारण सी लगने वाली वस्तुओं में भी उन्हें विलक्षण सुंदरता दिखाई देगी। उन्हें "सामान्य बातों में भी अद्भुतता" नज़र आएगी।

फिर परिस्थिति कुछ ऐसी बनी, कि लगा शायद हेनरी थोरो को अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पहले ही हार्वर्ड छोड़ना होगा। १८३६ की वसंत ऋतु के समय वह बीमार हो गया, और कई महीने के लिए उसे अपने घर पर रहना पड़ा। इतिहासकारों को यह तो नहीं पता कि हेनरी को क्या रोग था, लेकिन उनका अनुमान है कि शायद यह तपेदिक रहा होगा। यह संक्रामक रोग, जो कि फेफड़ों को प्रभावित करता है, अठारहवीं सदी में अक्सर ही फैलता था, और इसने बहुतों के प्राण लिए।

हेनरी के कुछ परिवार जनों ने उससे आग्रह किया कि वह पढ़ाई छोड़ दे। पढ़ाई के कारण उसकी सेहत बिगड़ती जा रही थी, उन्होंने उसे चेताया। लेकिन हेनरी फिर से हार्वर्ड लौट कर अपनी पढाई जारी रखना चाहता था। पूरी गर्मी कॉन्कार्ड में आराम करने के बाद जब उसकी तबियत कुछ सुधरी, पतझड़ का मौसम आते-आते वह हार्वर्ड वापस लौट गया।

परीक्षा में बहुत अच्छा परिणाम आने के कारण, १८३७ में जब उसकी कक्षा का दीक्षांत समारोह हुआ, तो इस अवसर पर उसे बोलने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। उसके व्याख्यान से यह साफ़ हो गया कि उसके विचार अधिकांश न्यू-इंग्लैंड निवासियों से बिलकुल भिन्न थे। "इस अद्भुत संसार में उसकी सुंदरता प्रमुख है, न कि उसकी उपयोगिता," हेनरी ने कहा। "इस प्रकृति को इस्तेमाल करने की अपेक्षा उसके सौंदर्य को सराहना और उससे आनंदित होना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।“

हेनरी को यह बिलकुल उचित नहीं लगता था कि लोग सप्ताह में छह दिन काम करें और केवल एक दिन आराम करने के लिए छोड़ें। अपितु हेनरी ने सुझाया कि, "इस व्यवस्था को उलटना चाहिए। केवल सातवें दिन इंसान को कड़ी मेहनत करके अपने गुज़ारे के लिए कमाना चाहिए, और बाकी छह दिन सैबथ यानि छुट्टी के होने चाहिए।“

हेनरी ने अपने सहपाठियों का आह्वान किया कि वे अपनी अंतरात्मा के प्रति सत्यनिष्ठ बनें, और एक स्वतंत्र जीवन जियें। उसने धन-दौलत से अधिक प्रेम का विरोध किया। उसे डर था कि लोग अपने लालच और स्वार्थ के कारण प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट कर देंगे। उसने छात्रों से आग्रह किया कि वे धन-दौलत के पीछे न भागें, जिससे "धरती सदा हरी-भरी और हवा हमेशा की तरह शुद्ध बनी रहे।"

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद हेनरी ख़ुशी-ख़ुशी कॉन्कॉर्ड वापस आ गया। वह तो चाहता था कि काश हफ्ते में छह रविवार होते जिन्हें वह प्रकृति के बीच बिता सकता। लेकिन उसे अपनी जीविका भी चलनी थी। वह कॉन्कॉर्ड के केंद्रीय विद्यालय में अध्यापक बन गया, जहाँ ९० छात्र घिच-पिच कर एक ही अध्ययन कक्ष में बैठते थे।

हेनरी को अध्यापन-कार्य शुरू किये अभी दो ही सप्ताह हुए थे, कि स्कूल की संचालक समिति का एक सदस्य उसके अध्यापन का निरीक्षण करने आ पहुँचा। उसने ज़ोर देकर कहा, कि जब छात्र ठीक से पेश न आएँ, तो उनकी पिटाई होनी चाहिए। इस बात पर हेनरी को गुस्सा आ गया। वह इतना विचलित और क्रुद्ध हो गया, कि बिना कारण ही उसने पांच-छह छात्रों की पिटाई कर डाली। फिर उसने यह नौकरी ही छोड़ दी।

उसने लिखा "मैं शिक्षण-कार्य को अध्यापक और छात्र दोनों के लिए एक सुखद अनुभव बनाऊंगा। हम अध्यापकों को भी छात्रों के साथ एक शिक्षार्थी बनना होगा।" हेनरी का मानना था कि श्रेष्ठ अध्यापक वह है, जो स्वयं भी अपने छात्रों से कुछ सीखे।

अधिकांश लोग शिक्षा के प्रति हेनरी के इन विचारों से सहमत नहीं थे। वह कहते, हेनरी तो अजीब ही है। शायद लोगों को यह भी बड़ा विचित्र लगा होगा, जब उसने अपना नाम डेविड हेनरी से बदल कर हेनरी डेविड कर लिया। कॉन्कॉर्ड के लोगों का मानना था कि नाम तो ईश्वर द्वारा दिए जाते हैं, और उन्हें बदलना उचित नहीं है। अब जब वह डेविड हेनरी से हेनरी डेविड बन गया था, लोगों को विश्वास हो चला कि वह वाकई अजीब इंसान है। जब उसे कहीं और पढ़ाने के काम नहीं मिल पाया, तो हेनरी अपने पिता की पेंसिल फैक्ट्री में ही काम करने लगा। उन दिनों अमेरिका में बनने वाली पेन्सिलों में भरा जाने वाला लैड बड़ी आसानी से टूट जाता था। हेनरी ने निश्चय किया कि वह अपने यहाँ बनने वाली पेन्सिलों को सुधारेगा।

वह हार्वर्ड के पुस्तकालय में गया और पेन्सिलों के विषय में जो कुछ उसे मिला, उसने उसका अध्ययन किया।

उसे पता चला कि जर्मनी के पेंसिल निर्माता पेन्सिलों में भरी जाने वाली ग्रेफाइट में एक विशेष प्रकार की चिकनी मिट्टी मिलाते थे, जिससे वह आसानी से न टूटें। फिर उसने यह भी पता लगाया कि ऐसी मिट्टी कहाँ बिकती है। उसने एक मशीन का भी अविष्कार किया जिससे लैड को अधिक बारीकी से पीसा जा सके। इससे पेन्सिलों में और अधिक मज़बूती आ गई।

यद्यपि इन सब सुधारों के बाद उसके परिवार के कारोबार का मुनाफा काफी बढ़ गया था, लेकिन पेंसिल फैक्ट्री के काम में हेनरी का मन बिलकुल नहीं लग रहा था। अध्यापन का काम ढूंढने वह मेन (Maine) भी गया, लेकिन उसे कोई सफलता न मिली।

फिर कॉन्कॉर्ड में हेनरी "प्रकृति" पुस्तक के लेखक एमर्सन के साथ समय व्यतीत करने लगा। एमर्सन ने उसे अपने पुस्तकालय से कुछ पुस्तकें पढ़ने को दीं, और उसका परिचय कॉन्कॉर्ड के अन्य लेखकों और दार्शनिकों से कराया। कॉन्कॉर्ड में बहुत से ऐसे लेखक और विचारक थे जो अक्सर एमर्सन के घर पर एकत्रित होते थे।

एमर्सन और हेनरी अक्सर ही वाल्डेन सरोवर के निकट टहलने जाते, और इन अवसरों पर एमर्सन को भी हेनरी से बहुत कुछ सीखने को मिला। एमर्सन को हेनरी के साथ टहलना पसंद था। उसने कहा, "हेनरी इस वन-प्रदेश को इतनी अच्छी तरह जानता है, जैसे कि कोई पक्षी या कोई लोमड़ी। उसे इस बर्फ से भरे क्षेत्र की एक-एक पगडण्डी का पता है, और यह भी कि कौन सा जानवर अभी-अभी वहां से गुज़र कर गया है।"

जो लेखक एमर्सन के घर एकत्रित होते थे, उन्हें ट्रान्सेंडैंटलिस्ट कहा जाता था। वे शिक्षा की एक नई विचारधारा में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि लोग एक प्रकार का ज्ञान जन्म से ही साथ लेकर आते हैं। उनका मत था कि प्रत्येक व्यक्ति को अच्छाई और सत्य का जन्मजात बोध होता है।

ट्रान्सेंडैंटलिस्ट मत के अनुसार सभी लोगों में एक अंतरात्मा, और उसकी आवाज़ होती है, जो कि उन्हें इस ज्ञान का बोध कराती है। उनका कहना था कि अक्सर बच्चे इस अंदर की आवाज़ को अधिक आसानी से सुन पाते हैं। वे मानते थे कि जो लोग सीधा-सादा और प्राकृतिक जीवन जीते हैं, वे भी इस आवाज़ को सुन पाते हैं।

लेकिन जैसे-जैसे लोग बड़े होते हैं, और उनके जीवन की व्यस्तता बढ़ने लगती है, वे इस अंतर्ध्वनि से संपर्क खो बैठते हैं। ये ट्रान्सेंडैंटलिस्ट लोग वयस्कों से आग्रह करते कि वे फिर से अपने अंदर की इस आवाज़ को सुनें। उनके अनुसार इसका एक उपाय यह था कि लोग अपना अधिक समय रोज़मर्रा की चिंता-परेशानिओं से दूर प्रकृति के बीच रह कर गुज़ारें।

ट्रान्सेंडैंटलिस्ट अपने साथ एक डायरी रखते थे, जिसमे वे अपने विचारों को नोट करते रहते थे। जब वे सोचते कि उन्हें डायरी में क्या लिखना है, उन्हें अपने अंदर की आवाज़ सुनाई देने लगती। डायरी लिखना उनका एक साधन था, अपने आत्म के अन्वेषण का, यह जानने का कि वे वास्तव में कौन हैं, और उनके जीवन का लक्ष्य क्या है। कभी-कभी अपनी डायरियों के अंशों को वे अपनी पुस्तकों व लेखों में भी शामिल करते थे।
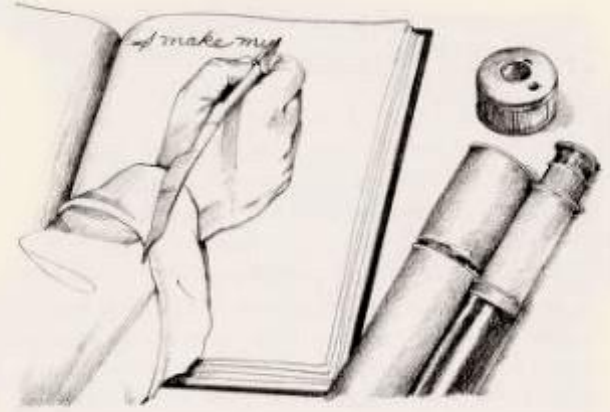
हेनरी ने निश्चय किया कि वह भी एक लेखक बनेगा, और अपनी डायरी लिखना प्रारम्भ करेगा। २२ अक्टूबर १८३७ को, जब वह २० वर्ष का था, हेनरी डेविड थोरो ने एक नई नोटबुक खोली, और उसमें ये शब्द लिखे: "आज मैं डायरी लिखने का श्रीगणेश करता हूँ।"

अध्याय ४ : प्रशिक्षक थोरो

१५ सितम्बर १८३८ को थोरो ने स्थानीय अख़बार योमॅन गजट में एक नोटिस छपवाया। इसमें एक नए स्कूल के खुलने की घोषणा की गई थी, जिसमें कुछ सीमित छात्रों को ही प्रवेश मिलेगा। इस स्कूल को खोलने वाले नए अध्यापक थे "प्रशिक्षक हेनरी डेविड थोरो"।

यद्यपि थोरो एक लेखक बनना चाहते थे, उन्हीं आशा नहीं थी कि उनके लेख व पुस्तकें जल्दी बिक पाएंगे। अच्छा लेखन सीखने के लिए समय और परिश्रम दोनों की आवश्यकता होगी, और इस बीच थोरो को धन कमाने का कोई साधन चाहिए था। इसलिए उन्होंने अपना स्वयं का स्कूल खोलने का निश्चय किया। हेनरी के भाई जॉन भी वहां पढ़ाने लगे।

जैसा कि प्रत्याशित था, थोरो का स्कूल १९वीं सदी के अन्य स्कूलों जैसा नहीं था। अधिकांश स्कूलों में बच्चे भोजन-अवकाश का कुछ समय छोड़ कर बाकी सारा समय अपने स्थान पर ही बैठे रहते थे। लेकिन हेनरी और जॉन हर हफ्ते बच्चों को वन-भ्रमण के लिए ले जाते, जहाँ वे पशुओं और वनस्पतियों का अवलोकन करते। वे उन्हें आस-पास की नदियों में नौकटन के लिए भी ले जाते, या फिर कॉन्कॉर्ड के किसी तालाब में तैराकी के लिये।

वन-भ्रमण के दौरान हेनरी उन्हें प्रकृति के बारे में बताते। कुछ छोटे बच्चे तो उसकी बातों से उत्साहित होकर दौड़कर हेनरी का हाथ पकड़ लेते। हेनरी के विषय में बच्चे कहते, "इन जंगलों में यदि कोई घटना सौ साल में एक बार भी हो, तो भी हेनरी उस समय वहां मौजूद रहते हैं, और उन्हें घटना की पूरी जानकारी रहती है।" वे हेनरी को "प्रशिक्षक हेनरी" कह कर बुलाते, क्योंकि वह एक सैनिक की भांति कमर सीधी करके खड़े होते थे। आम बोलचाल की भाषा में सैनिक तो प्रशिक्षक (Trainer) भी कहा जाता था।

हेनरी थोरो अपने छात्रों को उन स्थानों पर ले जाते थे जहाँ पहले रेड इंडियन लोगों के गांव और शिविर हुआ करते थे। न्यू इंग्लैंड के इन मूल निवासियों के इन स्थानों पर अब तो घास ही लहलहाती थी। लेकिन थोरो को पता था कि किस प्रकार आहिस्ता से फावड़ा लेकर मिट्टी को हटाना है, और वह रेड इंडियन लोगों के किसी प्राचीन पत्थरों से बने चूल्हे के अवशेषों को खोज निकालते। क्योंकि वह इस धरोहर तो नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते थे, वह सावधानी पूर्वक फिर उन्हें मिट्टी में दबा देते।

थोरो अपने छात्रों को बताते कि रेड इंडियन लोग उस स्थान पर ही क्यों बसे। वह बच्चों को उस झरने को खोजने को कहते जिनसे उन्हें पीने का पानी मिलता होगा, या फिर वे पहाड़ और गुफाएं जो उन्हें कड़ी सर्दी में पनाह देती होंगी। बच्चे रेड इंडियन लोगों की जीवन शैली के बारे में भी सीखते थे। रेड इंडियन लोग प्रकृति से केवल उतना ही लेते थे, जितनी उन्हें आवश्यकता होती। वे स्वयं को प्रकृति का ही हिस्सा समझते थे, उस को नष्ट करने या उस पर विजय प्राप्त करने जैसा उनका कोई मंशा न था।

थोरो के छात्रों के शिक्षा-ग्रहण का एक प्रमुख साधन था कार्यों को होते हुए ध्यानपूर्वक देखना, और उन्हें स्वयं भी करना। वे समाचार-पत्र के कार्यालय में जाते, और देखते कि अख़बार किस तरह छापा जाता है। वे बन्दूक बनानेवाले की दुकान पर जाते और देखते कि बंदूकें कैसे बनती हैं। वे सर्वेक्षण यानि भूमि की नाप-जोख का काम भी सीखते।
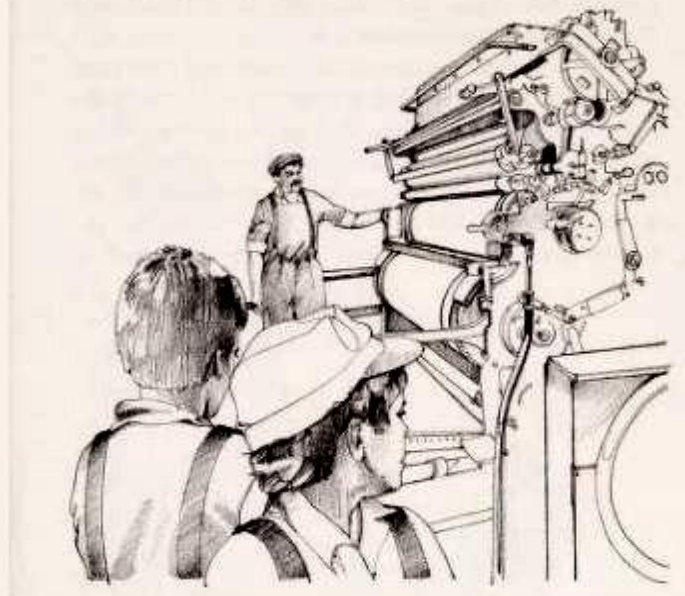
इस स्कूल में बच्चों को मारने-पीटने की बिलकुल इजाज़त नहीं थी। बल्कि, हर बच्चे को वचन देना होता था कि वह अच्छा आचरण करेगा, और ध्यान पूर्वक पढ़ेगा। "अगर तुम यहाँ केवल खेलने या खाली बैठने आये हो, या फिर सिर्फ दूसरों को पढता देखने के लिए, तो हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है", दोनों भाई उन्हें कहते। लेकिन दंड देने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन सभी का व्यवहार अच्छा था, और पढाई में उनका प्रदर्शन भी।

जब गर्मी की छुट्टियां आईं, तो हेनरी और जॉन ने एक नई नौका बनाई। उन्होंने इसका नाम रखा मसकेटाक्विद (Musketaquid), जो कि रेड इंडियन लोगों की भाषा में कॉन्कॉर्ड नदी का ही नाम था। उन्होंने अपनी नाव में खाद्‍य-सामग्री और खाने-पकाने के बर्तन भरे, और एक नए अभियान पर निकल पड़े। दो हफ्ते तक वे कॉन्कॉर्ड और मेर्रिमाक नदियों में न्यू हैम्पशायर के सुदूर इलाकों में घूमते रहे।

वहां रहने वाले लोग कुछ समय पहले ही वहां आकर बसे थे। हेनरी ने देखा कि जंगलों के बीच कुछ नए शहर खड़े हो गए हैं, "जैसे कि लोमड़ियाँ अपने रहने के लिए रेत के घर बना लेती हों।" इन शहरों के चारों ओर चीड़ और चिनार के घने जंगल देख कर उसे बहुत अच्छा लगा। "हमारे जीवन को ऐसी प्राकृतिक पृष्ठभूमि की बहुत आवश्यकता है, जहाँ चीड़ के पेड़ फलते-फूलते हों, और चिड़ियाँ चहकती हों", उसने लिखा था।

हेनरी और जॉन दोबारा किसी अभियान के लिए साथ नहीं गए। सन १८४० में जॉन बीमार हो गया। जैसे समय गुज़रा, अच्छा होने के बजाय वह और अधिक दुबला और कमज़ोर होता गया। उसे तपेदिक की बीमारी हो गई थी, और स्कूल में पढ़ाने लायक शक्ति उसमे नहीं रही। हेनरी अकेले स्कूल चलाना नहीं चाहता था, इसलिए उसने मार्च १८४१ में कॉन्कॉर्ड अकादमी को बंद कर दिया।

अब थोरो के सामने जीविका कमाने की पुरानी समस्या फिर से खड़ी हो गई। उसकी कुछ कविताएं प्रकाशित तो हुई थीं, परन्तु अब तक अपने लेखन से उसे कोई आमदनी नहीं हुई थी।

अतः वह फिर से छोटे मोटे काम करने लगा, जिनमें कुछ ऐसे भी थे, जो उसे बिलकुल नापसंद थे। एक बार उसने ७५ सेंट के लिए सूअरों के एक बाड़े की सफाई की। बहुत निराश मन से उसने अपनी डायरी में लिखा, "मैं अब पहाड़ी की दक्षिणी ढलान पर एक कुटिया बना कर रहूँगा, और जैसे भी ऊपरवाला मुझे रखेगा, उसे स्वीकार करूँगा।"

लेकिन इससे पहले की वह कुटिया बना पाता, एमर्सन ने उसे अपने पुराने और विशाल घर में रहने के लिए आमंत्रित किया। शायद एमर्सन घर के छोटे-मोटे काम और मरम्मत कर पाने में थोरो की भांति कुशल नहीं था। जल्दी ही दोनों में एक समझौता हो गया। थोरो रोज़ाना कुछ घंटे अपने कार्य-कुशल हाथों से एमर्सन के घर की देख-रेख के काम करता। बदले में एमर्सन ने उसे अपने घर के पुस्तकालय में बैठ कर लेखन कार्य करने की इजाज़त दे दी।

थोरो एमर्सन के घर में ही एक छोटे कमरे में रहने लगा। जल्दी ही उसने यह सिद्ध कर दिया कि वह घरेलू देख-रेख के काम में कितना कुशल था। वह बाग़बानी का काम करता और चिमनियां भी साफ़ करता। यहीं तक कि उसने श्रीमती एमर्सन के लिए कपड़े रखने की एक अलमारी भी बना दी।

लेकिन एमर्सन के लिए थोरो का महत्त्व घर की देख-रेख से कहीं अधिक था। जब एमर्सन व्याख्यान देने के लिए अन्य शहरों को जाते, तो उन्हें यह संतोष रहता था कि उनके पीछे थोरो उनके परिवार का ख्याल रखने के लिए वहां है।

थोरो ने एमर्सन के बच्चों, वाल्डो, एलेन, एडिथ और एडवर्ड के साथ एक घनिष्ठ रिश्ता बना लिया था। उसे उन बच्चों के साथ अच्छा लगता था, और वे भी जल्दी ही उससे हिल-मिल गए। एडवर्ड एमर्सन ने एक बार कहा : "हम बच्चों के लिए उससे अच्छा बड़ा भाई दूसरा नहीं हो सकता था। वह जल्दी ही हमारा साथी, हमारे भ्रमण अभियानों में हमारा मार्ग-दर्शक, और बाद में हमारे कैंपिंग के दौरे आयोजित करने में हमारा सलाहकार बन गया।"

शाम के समय सभी बच्चे दौड़ कर हेनरी के पास जाते, और उसका हाथ पकड़ कर उसे अंगीठी वाले कमरे में ले आते। फिर हेनरी उन्हें कहानियां सुनाता था, "कभी अपने बचपन के साहसी कारनामों की, या अधिकतर उन गिलहरियों, बाज़ों, या छछूंदरों की, जिन्हें उसने उसी दिन देखा होता था।"

जनवरी १८४२ में एक दिन अचानक थोरो एमर्सन का घर छोड़ कर चला गया। उसका भाई बहुत बीमार था। जॉन को टिटनेस हो गई थी, जो कि एक गंभीर बीमारी थी, और जिससे १९वीं सदी में बहुत सी मौतें हुई थीं। कुछ दिन पहले दाढ़ी बनाते समय जॉन की ऊँगली में उस्तरे से चोट आ गई थी। चोट ज़्यादा गहरी नहीं थी, इसलिए उसने उस पर कपड़े की पट्टी बांध ली थी। लेकिन उस घाव में संक्रमण हो गया। कोई भी जॉन की मदद नहीं कर सका। हेनरी की बाँहों में ही उसकी मृत्यु हो गई।

केवल दो हफ्ते बाद ही थोरो को एक और धक्का लगा, जब पांच वर्ष के वाल्डो एमर्सन की लाल बुखार से मृत्यु हो गई। थोरो इस संताप से इतना ग्रस्त हुआ, कि वह भी बीमार हो गया। "मुझे ऐसा लगता है कि जैसे पिछला एक महीना वर्षों की तरह बीता हो," उसने अपनी डायरी में लिखा।

थोरो वापस एमर्सन के घर में रहने आ गया, लेकिन १८४३ आते-आते उसे किसी बदलाव की ज़रूरत महसूस हो रही थी। वह न्यूयॉर्क में स्टैटेन आइलैंड को चला गया, जहाँ उसने कुछ दिन एमर्सन के भाई विलियम के पुत्रों को पढ़ाने का काम किया।

लेकिन जल्दी ही उसे अपने करीबियों और कॉन्कॉर्ड के जंगलों की याद सताने लगी। उसे समझ आया कि उसे जो कुछ भी करना है, कॉन्कॉर्ड में ही करना होगा। "मैं कॉन्कॉर्ड की धरती को अपने जूतों और अपने हैट में लिए घूमता हूँ," उसने लिखा। "क्या मैं खुद भी कॉन्कॉर्ड की मिट्टी का नहीं बना हूँ?"

"जागते रहना ही जीवन है।"

अध्याय ५ : यही है ज़िन्दगी

थोरो फिर से कॉन्कॉर्ड में अपने पिता की पेंसिल फैक्ट्री में काम करने लगा। जहाँ एक तरफ उसके हाथ दिन भर पेंसिल बनाने में व्यस्त रहते, उसका मन कुछ और ही योजनाएं बनाता रहता। उसके मन में जॉन के साथ की गई नौका यात्रा पर एक पुस्तक लिखने का विचार आया।

लेकिन एक बेचैन ज़िन्दगी में फंसा, वह इस बात पर झुंझला रहा था कि उसके पास लेखन कार्य के लिए बिलकुल समय ही नहीं था। उसे लगता कि ज़िन्दगी जीने का अवश्य इससे बेहतर कोई तरीका होना चाहिए। लोग अपना अधिकांश समय उन कामों में व्यतीत करें जो उन्हें पसंद न हों, यह बात उसे बिलकुल समझ नहीं आती थी। उसे लगता कि "हम एक अधम जीवन बिता रहे हैं, बिलकुल चींटियों की तरह।" हम उन चीज़ों के लिए काम करते हैं, जिनकी असल में हमें ज़रूरत ही नहीं है, जैसे "अधिक और स्वादिष्ट भोजन, बड़े और शानदार घर और महंगे कपड़े-लत्ते।"

उसके विचार से ज़्यादा अच्छा होता अगर लोग जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं भर के लिए काम करते, जैसे की सादा अच्छा भोजन, उसे पकाने के लिए ईंधन, और ज़रूरत लायक कपडे और घर जो शरीर को गर्म रख सकें। यदि लोग केवल इन ज़रूरतों के लिए काम करते, तो उन्हें जीवन का उद्देश्य खोजने और सही मायने में जीवन का आनंद उठाने की आज़ादी होती।

थोरो ने एक प्रयोग करने का निश्चय किया। उसने सारे भोग-विलासों से मुक्त एक सादा जीवन जीने का निश्चय किया, जिसमें वह किफ़ायत से रह कर अपने सीमित धन और साधनों का सर्वोचित प्रयोग कर सके। इस प्रकार उसके पास लेखन के लिए समय होगा, और वह यह भी विचार कर सकेगा कि जीवन में महत्वपूर्ण क्या है।

इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने के विचार मात्र से थोरो बड़ा उत्साहित हो गया। "यही है ज़िन्दगी," उसने कहा, "एक ऐसा प्रयोग जिसे मैंने अभी तक ठीक से आज़माया नहीं है।" इस प्रयोग के लिए स्थान की व्यवस्था एमर्सन ने की, जिसने हाल ही में वाल्डेन सरोवर के तट पर एक संपत्ति खरीदी थी। उसने थोरो को वहां रहने की इजाज़त दे दी।

इस प्रकार, सन १८४५ की वसंत ऋतु में, जब वह २७ वर्ष का था, थोरो वाल्डेन सरोवर पर रहने चला गया। उसने सरोवर के किनार एक स्थान चुन कर वहां एक कमरा बनाया, जिसमें वहां की रेतीली मिट्टी को खोद कर एक तहखाना भी बनाया गया था। एमर्सन और अन्य पड़ोसियों ने उस कमरे की दीवारों और छत के निर्माण में उसकी सहायता की। वह कमरा एक व्यक्ति के सुखपूर्वक रहने के लिए बिलकुल पर्याप्त था। थोरो के मित्रों ने कहा कि एक व्यक्ति के लिए वह कमरा इतना उपयुक्त और आरामदायक था, जैसे कि किसी ओवरकोट को पहन लेना।

चार जुलाई, यानि स्वतंत्रता दिवस के दिन, थोरो उस कमरे में जाकर रहने लगा। वह अपने साथ केवल कुछ ही सामान ले गया, जैसे कि अपनी चारपाई, कुर्सी-मेज़, और खाने -पकाने के बर्तन। वह बार-बार स्वयं को याद दिलाता कि मुझे अधिक से अधिक सादा जीवन बिताना है। इस सादे जीवन का निर्वाह ही थोरो के लिए स्वतंत्रता-प्राप्ति की व्यक्तिगत उद्घोषणा थी।

अपने नए घर में थोरो प्रतिदिन सुबह-सवेरे उठ जाता। उसने महसूस किया कि प्रातः-काल के समय उसका तन-मन बड़ा प्रफुल्लित होता था, जब पिछले दिन की चिंता-परेशानियां धुल कर साफ़ हो चुकी होती थीं। यही वह समय था, जब वह अपने को पूर्णतः जाग्रत पाता, और नए विचार स्वतः मन में अंकुरित होने लगते। थोरो ने लिखा, "प्रातः काल का समय जाग्रत करने वाला है, एक ऐसा समय जब मेरे अंतर में एक सूर्य का उदय होता है।"

थोरो का मानना था कि बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो कभी भी पूर्णतः जागृत अवस्था का अनुभव करते हों। इसलिए प्रतिदिन वे सोचने और सीखने के अनेक अवसरों को खोते रहते हैं। उसने कहा, "जागृत रहना ही वास्तव में जीवित रहना है।"

जैसे सुबह का समय बीतता, थोरो अपने दिनचर्या के कार्य करता। वह अपने कमरे को झाड़ता-बुहारता, और यदि मौसम अच्छा होता तो अपने बग़ीचे की देख-रेख करता। "अपने बग़ीचे के पेड़-पौधों से मुझे प्रेम हो गया था," उसने लिखा, "वे ही मुझे ज़मीन से जोड़े रखते थे, जिससे मुझे बहुत शक्ति मिलती थी।"

ठन्डे मौसम में थोरो पैसे कमाने के लिए कोई छोटा-मोटा काम कर लेता। कभी वह इमारतों की पुताई करता, तो कभी किसी के बग़ीचे की बाड़ बना देता। एक आदमी के लिए उसने चिमनी बनाई, और किसी और के लिए लकड़ी रखने का गोदाम। इस प्रकार, केवल छह हफ्ते काम करके उसने अपने साल-भर के गुज़ारे लायक पैसे कमा लिए। "यदि हम सादगी से और बुद्धिमानी-पूर्वक जीवन जियें, तो गुज़ारा चलाना कोई मुश्किल काम नहीं, बल्कि इसे हंसी-ख़ुशी से किया जा सकता है," उसने कहा।

लेकिन कुछ दिन इतने सुहावने होते हैं, कि तब काम करना बिलकुल ठीक नहीं जान पड़ता। "कुछ अवसर ऐसे भी आये कि मौसम के निखार को मैं किसी भी काम के लिए न्योछावर नहीं कर सकता था", उसने स्मरण किया।

जब सुहानी धूप में पक्षी चहचहाते हों, वह घंटों घर के बाहर यूँ ही बैठा रहता था, चीड़ व अन्य वृक्षों की फैली शाखाओं की छाया में। वाल्डेन सरोवर को जाने वाले रास्ते में पेड़ जंगली बेरों से लदे होते थे, जो कि देखने में बड़े सुन्दर लगते थे, लेकिन खाने में बहुत खट्टे। थोरो बिलकुल निःशब्द बैठा रहता। वह वृक्षों में चहचहाती, और उसके कमरे की खुली खिड़कियों से अंदर-बाहर उड़ती चिड़ियों की स्वच्छंदता में बिलकुल भी बाधा नहीं डालना चाहता था।

थोरो को सरोवर में नौका विहार करने में और उसके पारदर्शी जल के अंदर थिरकती मछलियों को देखने में भी बहुत आनंद आता था। "ग्रीष्म ऋतु की उष्ण संध्याओं को मैं अक्सर अपनी नौका में बैठ कर बांसुरी बजाता रहता," उसने लिखा, "और उन मछलियों को निहारता जो मेरी नौका से आकर्षित होकर उसके इर्द-गिर्द तैर रही होतीं। सरोवर में चन्द्रमा की प्रतिछाया ऐसी लगती कि मानो वह सरोवर की तलहटी में बिखरी लकड़ियों के बीच जाकर छिपने की कोशिश कर रहा हो।"

थोरो वाल्डेन सरोवर पर बिलकुल अकेला ही रहता था, लेकिन उसने कभी अकेलापन महसूस नहीं किया। वह अक्सर ही अपने परिवार से मिलने चला जाता, एमर्सन परिवार के साथ भोजन करता, और वे अक्सर वन-विहार के लिए उसके पास आ जाते, और जंगलों में बेर तोड़ते।

अन्य लोग भी उससे मिलने के लिए आते। "जब मैं जंगल में रहता था, तब जितने लोग मुझसे मिलने के लिए आये, उतने मेरे जीवन में और कभी नहीं आये," उसने लिखा था। कॉन्कॉर्ड के निवासी जब अपने शहरी जीवन से अवकाश लेना चाहते, वे अक्सर वाल्डेन सरोवर को चले आते। अधिकांश लोग थोरो से बात करने को इच्छुक, उसके द्वार पर जा पहुँचते। उन्हें यह जानने की जिज्ञासा रहती कि वह जंगल में अकेला कैसे रहता है। थोरो ऐसे आगंतुकों को "सच्चा तीर्थयात्री" कहता था, "जो कि स्वतंत्रता की खोज में जंगल की ओर चले आते थे।"

ऐसे आगंतुकों में थोरो का प्रिय आगंतुक था एक घने बालों वाला लकड़हारा, अलेक थेरियन। थोरो ने लिखा, "उससे अधिक सीधे-सादे और प्राकृतिक व्यक्ति को खोजना शायद मुश्किल होगा।" थोरो ने कहा कि थेरियन, जिसकी गर्दन मांसल और धूप से झुलसी हुई थी, प्राकृतिक जीव-जंतुओं के से सरल स्वाभाव का था। यदि कोई बात उसे गुदगुदाती या उत्साहित करती, तो कभी-कभी वह ख़ुशी से हँसता हुआ घास में लोट लगाने लगता।

कॉन्कॉर्ड के बच्चे भी थोरो के पास आया करते। उनके साथ वह हमेशा की तरह एक उत्साही अध्यापक बन जाता। एक लड़की ने याद किया, "वह हमें जंगल में सबसे मीठे बेरों, छिपे हुए घोंसलों, और दुर्लभ फूलों के पास ले जाता।" ये बच्चे थोरो से न केवल प्रकृति से प्रेम करना सीखते, बल्कि उसकी सुरक्षा और संरक्षण भी।

उस लड़की ने यह भी कहा कि थोरो उन्हें सिखाता था कि, "कोई भी पेड़-पौधा नष्ट न होने पाए, और किसी भी पक्षी के अंडे को क्षति न पहुंचे।"

कभी-कभी दास-प्रथा से छूट कर भाग निकलने वाले गुलाम थोरो के कमरे पर आ पहुँचते। ये लोग "भूमिगत रेल" से होकर कनाडा जा रहे होते थे। भूमिगत रेल उन लोगों के एक गुप्त समूह का नाम था, जो इन गुलामों को दास-प्रथा से छुटकारा पा उत्तरी क्षेत्रों में पहुँच कर एक स्वतंत्र जीवन जीने में सहायता करते थे। अपने परिवार के अन्य सदस्यों की भांति थोरो भी दास-प्रथा का अंत देखना चाहते थे। वह इन भयभीत लोगों को अपने पास रात्रि में रुकने का स्थान देते, जो "अक्सर भय से ऐसे चौकन्ने हो जाते, जैसे कि शिकारी कुत्तों से भयभीत कोई लोमड़ी।"

थोरो वाल्डेन सरोवर पर केवल एक सादा जीवन जीने के लिए नहीं आये थे। वह लिखना भी चाहते थे। एक वर्ष में उन्होंने जॉन के साथ अपनी नौका-यात्रा पर एक पुस्तक लिख कर पूरी की, जिसका नाम था "कॉन्कॉर्ड और मेरिमाक नदियों पर एक सप्ताह"। उन्होंने वन में व्यतीत किये अपने जीवन पर भी एक पुस्तक लिखना प्रारम्भ किया।

इस पुस्तक में उन्होंने अपने जिज्ञासु पाठकों को बतलाया कि वह किस प्रकार रहते थे, और क्यों उन्हें कभी भी भय या अकेलापन महसूस नहीं हुआ। यह पुस्तक बतलाती थी कि थोरो ने अपने इन प्रयोगों से क्या सीखा, और पाठकों को जीवन जीने के स्वयं के प्रयोग करने के लिए प्रेरित करती थी।

इस पुस्तक का नाम था वाल्डेन।

"नए महाद्वीपों के लिए कोलंबस जैसे बनो।"

अध्याय ६ : एक जिज्ञासु यात्री

वाल्डेन पुस्तक में हेनरी थोरो के सरोवर पर बिताये गए जीवन का संपूर्ण विवरण था। वहां थोरो प्रकृति के इतना समीप रहते थे कि वे उसके बहुत से रहस्यों को जान गए। उन्होंने जीवन और मरण के चक्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। ऋतुओं के बदलने के साथ जो परिवर्तन आते हैं, उन्हें पहले से कहीं अधिक बारीकी से समझा।

थोरो ने देखा कि किस प्रकार जंगल के जीव-जंतु भोजन के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। जब मेंढकों के अंडे पकते, तो सरोवर छोटे-छोटे मेंढक के बच्चों से भर जाता। इतने अधिक बच्चे होने के कारण ही प्रजाति का अस्तित्व सुरक्षित था। लेकिन ये मेंढक के बच्चे ही अन्य जानवरों के लिए स्वादिष्ट भोजन बनते थे। बगुले व अन्य पक्षी जी भर कर इन्हें खाते थे।

जीव-जंतुओं को इस प्रकार मरते देख कर थोरो को कष्ट होता था। कभी-कभी उसे लगता कि जैसे वन में रक्त और मांस की वर्षा हो रही हो। लेकिन फिर उसे समझ आया, कि इस प्रकार कोई एक प्रजाति सीमा से अधिक नहीं बढ़ पाती, और प्रकृति का संतुलन बना रहता है। जन्म और मृत्यु का यह चक्र प्रकृति की व्यवस्था का ही एक भाग था।

जंतुओं के शारीरिक लक्षण किस प्रकार जीवित रहने में उनकी मदद करते हैं, इसका अध्ययन करने में थोरो की बहुत रूचि थी। एक दिन शीत ऋतु की संध्या को एक खरगोश उसके घर के द्वार के समीप एकदम शांत बैठा हुआ था।
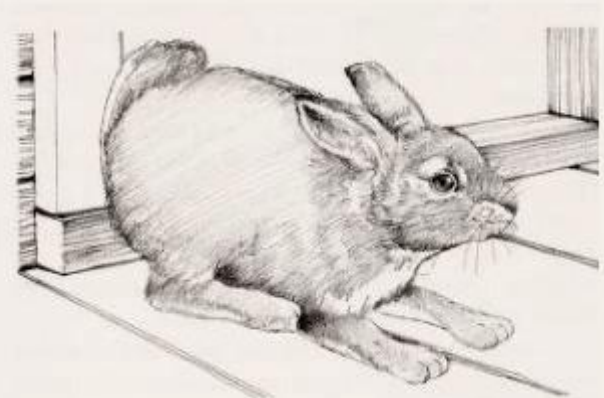
खुरदुरे कानों और नुकीली नाक वाला, बिलकुल दुबला और कमज़ोर, थोरो को वह बड़ा असहाय सा जान पड़ा। लेकिन जैसे ही थोरो ने उसकी ओर कदम बढ़ाया, वह बड़ी फुर्ती से छलांग लगा कर बर्फ की चादर पर दौड़ता दूर भाग गया। थोरो को समझ आया कि उसका शरीर किसी बीमारी के कारण दुबला-पतला नहीं था। शरीर हलका होने के कारण वह जल्दी खतरे से दूर भाग सकता था। "उसका दुबलापन अकारण ही नहीं था," उसने लिखा।

थोरो को प्रकृति के सौंदर्य पर भी अचम्भा होता था, जो कि अनेक प्रकार से दिखाई देता था, यहाँ तक कि मछलियों के रंगों में भी। उसने पाया कि पिकरेल मछली में एक अद्भुत सुंदरता है। उनके चारों ओर के पानी के साथ ही उनका रँग भी बदलता नज़र आता था। "वे चीड़ के पेड़ों जैसी हरी भी नहीं हैं, न ही पत्थरों सी सलेटी, और न आकाश जैसी नीली," थोरो ने ध्यान दिया। बल्कि पिकरेल का रंग कुछ अलग ही था, शायद फूलों जैसा, या फिर बहुमूल्य मणियों सा, जैसे कि वे मोती समान हों।

थोरो ने महसूस किया कि प्रकृति के बीच वह कभी अकेला नहीं था। रेड इंडियन लोगों की भांति ही, जो कभी कॉन्कॉर्ड के इन जंगलों में रहते थे, उसने देखा कि इंसान भी प्रकृति का ही हिस्सा हैं, उससे अलग नहीं। "अचानक ये पक्षी मुझे अपने पडोसी से प्रतीत हुए," उसने लिखा।

वाल्डेन सरोवर थोरो का सतत सहवासी था, और ऋतुओं के साथ उसमें आते बदलावों को वह बड़े चाव से निहारता था।

वाल्डेन सरोवर काफी गहरा था, और गर्मी के मौसम में चिलचिलाते सूरज के बावजूद उसका जल शीतल बना रहता था। गर्मी की शांत दोपहरी को सरोवर की सतह थोरो को किसी दर्पण सी सपाट और चिकनी जान पड़ती थी।

नवम्बर में पानी की सतह पर नन्हे गड्ढे से पड़ने लगते, मानो बरसात हो रही हो। लेकिन बिलकुल सूखे मौसम में भी ऐसा होता था। इन गड्ढों का कारण था पर्च नाम की नन्ही पीतल के रंग वाली मछलियों का पानी में खेलना।

सर्दियों में थोरो जमे हुए सरोवर पर लेट जाता, और बर्फ के अंदर बने बुलबुलों को देखता। ये बुलबुले "बहुत चमकदार और सुन्दर थे," उसने लिखा।" इनमें आप बर्फ के भीतर अपने चेहरे का प्रतिबिम्ब भी देख सकते हैं।"

वसंत ऋतु में सरोवर के चारों ओर पेड़ों पर नई कलियाँ फूटने लगतीं, जो वहां के परिदृश्य को बड़ा मोहक बना देतीं, विशेषकर जब आकाश में बदल छाये हों, मानो कोहरे के बीचे से सूरज की किरणें फूट कर पहाड़ियों को यहाँ-वहां प्रकाशित कर रही हों।

थोरो को लगता था कि जैसे वाल्डेन सरोवर धरती की एक आँख हो। वह कल्पना करता कि सरोवर के तट के वृक्ष उस आँख की पलकें हैं और चारों ओर की वृक्षों से लदी पहाड़ियां उसकी भौंहें। थोरो को अक्सर इस आँख में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई देता, ठीक वैसे ही, जैसे कोई व्यक्ति यदि किसी दूसरे की आँख में करीब से देखे तो उसे अपना प्रतिबिम्ब दिखाई देगा। और जब थोरो स्वयं को देखता, तो उसे भान होता कि वह समय के साथ कितना बदल चुका है।

जब वह युवा था, उसे लगता था कि वाल्डेन सरोवर सदा ही अपनी सुंदर वअछूती प्राकृतिक अवस्था में रहेगा। "जब मैं पहली बार इस सरोवर में नौका विहार के लिए आया," उसने स्मरण किया,"यह चारों ओर से चीड़ और बलूत के घने जंगलों से घिरा हुआ था।"

लेकिन अब थोरो को पता था कि इंसान इस प्राकृतिक संसार को नष्ट कर सकते हैं। क्योंकि लोगों को लकड़ी से बनी वस्तुओंकी आवश्यकता थी, और वाल्डेन सरोवर के निकटवर्ती वृक्षों को काटा जा रहा था।
"लकड़हारे इस वन को धीरे धीरे नष्ट करते जा रहे हैं,"
थोरो ने लिखा,
"पेड़ इतने अधिक कट चुके हैं, कि उन वृक्षों के बीच घूमने का पहले जैसा आनंद मैं अब बहुत वर्षों तक नहीं ले पाऊँगा।

पेड़ों के कटने से केवल वहां का प्राकृतिक सौंदर्य मात्र ही नष्ट न हीं होताथा। इससे वन्यजीवन को भी बहुत हानि होती थी। "आप पक्षियों से चहचहाने की आशा कैसे कर सकते हैं," थोरो ने पूछा, “जब उनके आशियाने ही काट डाले जाएँ?"

इंसान इस प्राकृतिक स्थान को अन्य प्रकार से भी नुकसान पहुंचा रहे थे। रेल की पटरियां सरोवर तट के निकट ही बिछाई गई थीं। रेलगाड़ी की सीटी की आवाज़ थोरो को ऐसी जान पड़ती, जैसे कोई शिकारी बाज़ किसी किसान के जानवरों के दड़बे के ऊपर से चीखता हुआ उड़ रहा हो।" उधर कॉन्कॉर्ड के निवासी अपने शहर के लिए वाल्डेन सरोवर से पानी की पाइपलाइन बिछाने की बातें कर रहे थे।

थोरो समझनेकी कोशिश करता था कि प्रकृति के प्रति लोगों का दृष्टिकोण क्या है? बहुत से लोग जंगलों को एक अपरिचित और डरावनी जगह समझते हैं। दूसरों के लिए प्रकृति का महत्व केवल उस से मिलने वाली लकड़ी, धातु वअन्य उपयोगी वस्तुओं के कारण था। लेकिन हेनरी थोरो का मानना था कि प्रकृति का मूल्य इस सब से कहीं अधिक है।

वाल्डेन पर गुज़ारे उसके समय ने उसे जीवन के बारे में एक महत्वपूर्ण शिक्षा दी थी : नए अनुभवों से लोगों में बदलाव आता है, जिससे उन्हें नई बातें सीखने और स्वयं को विकसित करने का अवसर मिलता है। इसके परिणामस्वरूप वे पूरी तरह जागृत और सही अर्थों में जीवित महसूस करते है।

लोग कितना भी स्थायी जीवन क्यों न जी रहे हों, वे अवश्य अपनी आदतों को बदल सकते हैं, थोरो कहता था। यह सोचना बिलकुल अनुचित है कि "यदि हम अपने खेतों के चारों ओर पत्थर की मोटी दीवारें उठा लें, तो हमारी ज़िंदगियाँ सीमित हो जाएँगी, और हमारा भाग्य निश्चित।"

थोरो ने अपने पाठकों से जीवन के साथ कुछ प्रयोग करने को कहा। उसने उन्हें चुनौती दी, कि ज़िंदगी जो कुछ उन्हें पेश करती है, उसे यूं ही स्वीकार न कर लें, बल्कि जीवन को एक जिज्ञासु यात्री की तरह जियें,

अपने जहाज़ से चारों ओर उत्सुकतापूर्वक देखते हुए। "अपने अंदर के नए संसारों और महाद्वीपों के लिए एक कोलंबस की तरह बनो, और नए रास्ते खोजो, व्यापार के नहीं, बल्कि विचारों के," उसने सुझाया।

थोरो जब सरोवर पर रहने आया तो यह उसके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव था। आसपास की टहनियों को हटाकर जब उसने पेड़ों के बीच चलना शुरू किया, उसे नए और रोमांचक दृश्य और ध्वनियाँ देखने व सुनने को मिले, नए विचारों और नई संवेदनाओं ने उसके मन को छुआ। लेकिन जल्दी ही उसे अपना वाल्डेन का घर सामान्य सा लगने लगा। उसने देखा कि उसके पैरों ने घर और सरोवर-तट के बीच एक पग-डंडी बना दी थी।

लेकिन इस पगडण्डी ने उसे इतना विचलित नहीं किया। उसे तो अपने मन में अपने विचारों से बन रही पगडण्डी की अधिक चिंता थी। थोरो को समझ आया कि वह अपनी दिनचर्या और वातावरण का अभ्यस्त होता जा रहा था। उसके मन में नए विचारों का आना बहुत कम हो गया था। उसे यह जान कर थोड़ा आश्चर्य हुआ कि कितनी जल्दी लोग "अपने लिए घिसीपिटी लीक बनाकर उस पर चलने के अभ्यस्त हो जाते हैं।”

१८४७ की ग्रीष्म ऋतु तक हेनरी थोरो यह समझ चुका था कि यदि वह सीखते रहना और आगे बढ़ते रहना चाहता था, और पूरी तरह जागृत और जीवित रहना चाहता था, तो उसे फिर कुछ बदलाव लाना होगा। वह देख रहा था कि अब सरोवर को छोड़ने का समय आ गया है।

"मैंने जंगल को उन्हीं वजहों से छोड़ा, जिनके कारण मैं वहां गया था," उसने अपनी पुस्तक वाल्डेन में लिखा। "शायद मुझे लगा कि मुझे ज़िन्दगी को कई और तरह से जीना है, और इस एक तरह से जीने के लिए मैं और अधिक समय नहीं दे सकता था।"

६ सितम्बर १८४७ के दिन थोरो ने वाल्डेन सरोवर छोड़ दिया, यहाँ आने के ठीक दो साल, दो महीने, और दो दिन के बाद। अब वह ३० वर्ष का था, और कुछ नए प्रयोग करने के लिए तैयार था।

लेकिन वाल्डेन सरोवर पर सीखी शिक्षाएं उसे हमेशा याद रहीं। यह शिक्षा उसने अपने पाठकों से भी साझा की:

"*अपने प्रयोगों से मैंने कम से कम इतना ज़रूर सीखा है, कि यदि कोई निडर होकर अपने सपनों की ओर कदम बढ़ाये, और जीवन को अपनी कल्पना के अनुरूप जीने का प्रयास करे, तो उसे अवश्य वह सफलता मिलेगी, जो दूसरों को आसानी से नहीं मिलती।*"

"मृत्यु आपके उतनी ही करीब है, जितनी कि मेरे।"

अध्याय ७ : एक दूर देश में

१८४६ में जुलाई महीने की एक शाम को, जब वह वाल्डेन सरोवर पर ही रहता था, थोरो टहलता हुआ कांकॉर्ड को गया। उसने मोची को अपने जूते मरम्मत के लिए दिए थे, जो उसे वापस लेने थे, और वह कांकॉर्ड के अपने पड़ोसियों से भी मिलना चाहता था। उसने अपने शहर को "एक महान समाचार कक्ष " की संज्ञा दी थी। वह कहता था कि यह वह जगह है, जहाँ गप-शप "एक मुंह से दूसरे मुंह, और एक अख़बार से दूसरे अख़बार" को सफर करती रहती थी। कभी-कभी थोरो को भी इस गप -शप में मज़ा आता था। यह उसे वैसे ही "तरोताज़ा करने वाली लगती थी, जैसे पत्तियों की सरसराहट, या फिर मेंढकों का टर्राना।"

जुलाई की उस शाम, थोरो हवलदार सैम स्टेपल्स से टकरा गया। लेकिन स्टेपल्स उस समय गप-शप के मूड में नहीं था। बल्कि वह शिकायत करने लगा, कि थोरो ने पिछले छह साल से अपना व्यक्ति-कर नहीं दिया था। बीस से सत्तर की उम्र के प्रत्येक व्यक्ति को यह टैक्स चुकाना होता था। उसने थोरो को चेताया, कि अगर उसने जल्दी ही यह टैक्स नहीं चुकाया, तो उसे जेल को हवा खानी पड़ेगी।

थोरो ने जान-बूझ कर अपना टैक्स नहीं भरा था। वह ऐसी सरकार को टैक्स नहीं देना चाहता था जो गुलामी-प्रथा की इजाज़त देती हो। इसके अलावा, उस समय अमेरिका और मेक्सिको के बीच युद्ध चल रहा था। थोरो का मानना था कि इस युद्ध के द्वारा अमेरिका दक्षिण के गुलाम रखने वाले सामंतों के लिए और अधिक भूमि हथियाना चाहता है। वह युद्ध के सख्त खिलाफ था, और टैक्स देकर इस युद्ध में सहायक बनना हरगिज़ नहीं चाहता था।

थोरो ने निश्चय किया वह कानून का पालन करने के बजाय अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर चलेगा। उसका कहना था कि वह टैक्स तभी देगा जब "अमेरिका दास-प्रथा को समाप्त करेगा, और मेक्सिको से युद्ध करना भी।" जहाँ तक जेल जाने का सवाल है, थोरो ने कहा "सैम, मैं तो अभी तुरंत जेल जाने के लिए तैयार हूँ।"

अतः हवलदार ने थोरो को गिरफ्तार कर लिया, और उसे कॉन्कार्ड के कारागार को ले गया, जिसकी इमारत पत्थर की मोटी दीवारों, और लोहे और लकड़ी से बने मज़बूत दरवाज़ों से लैस थी। थोरो, जो हमेशा ज़िन्दगी को पूरी तरह जीने की कोशिश करता था, अब जेल की जिंदगी के बारे में सब-कुछ जानना और समझना चाहता था। जेल में एक रात बिताना थोरो के लिए "किसी ऐसे दूर देश का सफर करने जैसा था, जहाँ जाने की मैंने कभी कल्पना भी न की होगी।"

जेल की खिड़की की सलाखों के पीछे से वह रात को कॉन्कार्ड की सड़कों से आती आवाज़ों को सुनता। जेल की उस कोठरी में रहने वाले दूसरे कैदी से बातचीत करता, जिसे एक खलिहान को आग लगाने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया था। बातचीत से वह थोरो को इतना अच्छा लगा, कि उसने सोचा कि शायद उसने आग जान-बूझ कर नहीं लगाई होगी, बल्कि सिगरेट पीते-पीते सो जाने की वजह से लग गई होगी।

जल्दी ही हेनरी की गिरफ़्तारी का समाचार थोरो परिवार तक पहुंचा। रात के समय कोई व्यक्ति, शायद थोरो का कोई रिश्तेदार, हवलदार के पास आया, और उसने थोरो का टैक्स चुकता कर दिया।

अगले दिन सुबह स्टेपल्स थोरो को रिहा करना चाहता था, लेकिन एक समस्या आ गई। थोरो ने जेल छोड़ने से मना कर दिया। वह चाहता था कि सब लोग उसकी कैद के बारे में जानें। उसे आशा थी कि इससे लोगों का ध्यान गुलामी की कुप्रथा के मुद्दे की ओर जायेगा। लेकिन सैम स्टेपल्स ने उससे कहा, "हेनरी, अगर तुम खुद बाहर नहीं जाओगे तो मुझे तुम्हें जबर्दस्ती यहाँ से निकलना होगा, क्योंकि अब तुम यहाँ और नहीं रह सकते।"

थोरो जेल से बाहर आया और अपने कुछ दोस्तों के साथ जंगल में बेर तोड़ने चला गया। बाद में उसने जेल में काटी अपनी रात के बारे में एक लेख लिखा। "सामाजिक असहयोग के कर्त्तव्य पर" इस शीर्षक वाला यह लेख लोगों से आग्रह करता है कि वे अनुचित कानूनों को मानने के बजाय अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को सुनें। थोरो का मानना था कि यदि अधिकांश लोग ऐसा करें तो आवश्यक बदलाव एक शांतिपूर्ण ढंग से लाये जा सकते हैं।

१८५७ में थोरो ने एक बार फिर दास-प्रथा की समाप्ति के लिए काम किया। जॉन ब्राउन नाम का गुलामी-प्रथा का विरोधी एक जोशीला नेता इस कार्य के लिए धन जुटाने कॉन्कार्ड आया। ब्राउन गुलामों की रिहाई के लिए बल-प्रयोग तक करने के पक्ष में था, लेकिन उसने कभी यह स्पष्ट नहीं किया कि ऐसा किस प्रकार करना है। थोरो के पास अधिक पैसे तो नहीं थे, लेकिन उसने ब्राउन की सहायता अन्य प्रकार से की।

अक्टूबर १८५९ में थोरो अपने परिवार के घर में रह कर इधर उधर छोटे-मोटे काम कर रहा था, जब उसे पता चला कि जॉन ब्राउन किस प्रकार दास-प्रथा का अंत करना चाहता था। कॉन्कार्ड में यह समाचार पहुँचा कि ब्राउन ने अपने साथियों के साथ हार्पर्स फेरी (Harpers Ferry) वर्जीनिया में सरकारी हथियारखाने पर हमला कर दिया है। उन्हें आशा थी कि इस हमले से वहां के गुलामों में बगावत करने की हिम्मत आएगी। वे एक नए राज्य का गठन भी करना चाहते थे, जहाँ गुलाम रखना गैर-क़ानूनी होगा।

लेकिन उनकी योजना सफल नहीं हुई, और अमेरिकी सैनिकों ने ब्राउन के साथियों को पराजित कर दिया, जिनमें से अधिकतर या तो मारे गए, या गिरफ्तार कर लिए गए। जॉन ब्राउन खुद भी ज़ख्मी हो गया, और उसे भारी सुरक्षा के बीच जेल में रखा गया।

२ दिसंबर १८५९ को जॉन ब्राउन को फांसी दे दी गई। थोरो ने बाद में लिखा की यद्यपि सरकार ने ब्राउन को मार डाला है, उसकी मुहिम अभी भी ज़िंदा है। ब्राउन "पहले से आज कहीं अधिक जीवित है," थोरो ने कहा, क्योंकि वह लोगों के दिल-ओ -दिमाग़ में अभी भी ज़िंदा है। "वह अब चोरी-छिपे काम नहीं करता। वह खुले-आम सूर्य के प्रकाश में इस धरती पर जनता के मध्य काम कर रहा है।"

१८६० तक दास-प्रथा का यह विवाद देश को गृह युद्ध की ओर खींचने लगा था। लेकिन हेनरी थोरो, जो कि पहले दास-प्रथा का इतना मुखर विरोधी था, अब इन युद्ध के समाचारों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दे रहा था। वह तपेदिक की बीमारी से बहुत दुर्बल हो गया था।

जैसा कि उसने जीवन भर किया था, एक बार फिर उसने प्रकृति का रुख किया, जिसमें स्वस्थ करने और शक्ति देने की क्षमता थी।

उसने रात्रि के समय टहलने प्रारम्भ किया, क्योंकि वह प्रकृति के अँधेरे में दिखने वाले दृश्यों, और सुनाई देने वाली ध्वनियों को अनुभव करना चाहता था। रात को कॉन्कार्ड का शहर भी, जिसे वह भली भांति जानता-पहचानता था, एक नए और अनजाने स्थान जैसा प्रतीत होता था। "मुझे रास्ता पहचानने के लिए अक्सर ही रास्ते पर लगे पेड़ों के बीच देखना पड़ता था," उसने कहा, "और जहाँ रास्ता नहीं था, वहां मुझे अपने ही कदमों से बनी पगडण्डी को पैरों से टटोल कर पहचानना पड़ता था।"

१८६० की वसंत ऋतु में थोरो ने मिन्नेसोटा की यात्रा की। उसे उम्मीद थी कि वहां की खुश्क हवा शायद उसके फेफड़ों को फिर से ठीक करने में सहायक होगी। लेकिन जब वह कॉन्कार्ड लौट कर आया, उसकी तबियत पहले के मुकाबले और बिगड़ी हुई थी। "मैं इतने लम्बे समय से बीमार हूँ," उसने लिखा, "कि लगभग भूल ही गया हूँ कि स्वस्थ होना क्या होता है।"

थोरो ने अपने जीवन के आखिरी कुछ महीने अपने पुश्तैनी घर की बैठक में ही बिताये, क्योंकि वह दुर्बलता के कारण सीढ़ियां चढ़ने में असमर्थ था। उसके मित्र अक्सर उससे मिलने आया करते। यहाँ तक कि हवलदार सैम स्टेपल्स भी उससे मिलने आया। बाद में स्टेपल्स ने एमर्सन को बताया था कि उसने "मृत्यु के निकट किसी इंसान को कभी इतना प्रसन्नचित्त और शांत नहीं देखा था।"

थोरो को मृत्यु का सामना करने में किसी प्रकार के भय का आभास नहीं हुआ। "जब मैं एक लड़का था, तभी मैंने यह समझ लिया था कि एक दिन मुझे मरना ही है, इसलिए इस समय मुझे कोई निराशा नहीं है," उसने अपने एक मित्र को बताया था। "मृत्यु तुम्हारे भी उतनी ही करीब है, जितनी कि मेरे।“

उसे अपने मित्रों का मिलने आना अच्छा लगता था, लेकिन वह चाहता था कि आस-पड़ोस के बच्चे उससे अधिक मिलने के लिए आएं। "वह मुझे इतने प्यारे लगते हैं, जैसे कि वे मेरे अपने ही बच्चे हों," उसने स्वीकार किया।

६ मई १८६२ की सुबह थोरो जब सो कर उठा, उसकी तबियत बहुत अधिक ख़राब थी। वह "मूस" व "इंडियन" जैसे कुछ शब्द बुदबुदा रहा था, जैसे कि उसकी कल्पना उसे वापस मेन के जंगलों में खेंच ले गई हो। फिर उसकी आँखे बंद हो गईं, और उसने यह संसार छोड़ दिया।

उसे कॉन्कार्ड के छोटे से कब्रिस्तान में दफ़ना दिया गया। उसकी सादी सी कब्र के पत्थर पर केवल एक शब्द लिखा था: हेनरी।

"आओ हम इस नए संसार को नया ही बनाये रखें।"

अध्याय ८: जीवन का नृत्य

मृत्यु के समय तक भी हेनरी डेविड थोरो को एक लेखक के नाते अधिक ख्याति प्राप्त नहीं हुई थी। "कॉन्कार्ड और मेरिमाक नदियों पर एक सप्ताह" पुस्तक की मुट्ठी भर प्रतियां ही बिक पाई थीं। अधिक से अधिक दो-एक हज़ार लोगों ने ही "वाल्डेन" पुस्तक पढ़ी थी। बहुत कम लोग ऐसे थे, जिन्होंने थोरो के जीवनकाल में उसके लेखन के महत्त्व को समझा हो।

एक व्यक्ति जिसने वास्तव में उसे समझा, वह था राल्फ वाल्डो एमर्सन। थोरो की अंत्येष्टि के समय एमर्सन ने भविष्यवाणी की थी कि हेनरी थोरो की ख्याति बहुत बढ़ेगी, "अभी इस देश को ज़रा भी भान नहीं है, कि उसने अपना कितना बड़ा सपूत खो दिया है," एमर्सन ने कहा।

एमर्सन की भविष्यवाणी बिलकुल सत्य साबित हुई। हेनरी थोरो के देहांत के कुछ समय बाद ही एक लोकप्रिय पत्रिका "अटलांटिक मासिक" ने उसके कुछ लेख प्रकाशित किये। वाल्डेन पुस्तक जल्दी ही लोकप्रिय हो गई, और उसके अनेक संस्करण छापे गए। "कॉन्कार्ड और मेरिमाक नदियों पर एक सप्ताह" के भी कई संस्करण छपे। १९०६ में थोरो की डायरी का भी प्रकाशन हुआ। इसमें २० लाख से भी अधिक शब्द थे, और इसे १४ भागों में प्रकाशित किया गया।

सामाजिक असहयोग पर लिखे उसके लेख ने अनेक तत्कालीन नेताओं को शांतिपूर्ण बदलाव के लिए कार्य करने को प्रेरित किया। जिन लोगों ने इस लेख को पढ़ा, उनमें से एक महात्मा गाँधी भी थे, जिन्होंने इंग्लैंड से भारत की आज़ादी के आंदोलन का नेतृत्व किया था। "इसमें कोई संशय नहीं कि थोरो के विचारों ने मेरे आंदोलन को बहुत प्रभावित किया," गाँधी ने कहा।

मार्टिन लूथर किंग ने भी इस लेख को पढ़ा। उन्होंने नस्लभेद और अमेरिका में नीग्रो लोगों से हो रहे भेदभाव का अहिंसक तरीकों, जैसे बहिष्कार, धरना और प्रदर्शन के द्वारा विरोध किया।

लेकिन थोरो की जिस कृति ने लोगों को सर्वाधिक प्रभावित किया है, वह है *वाल्डेन*। इसने संसार को सिखाया कि प्रकृति को उसके मौलिक स्वरुप में अछूता छोड़ कर ही उसके मूल्य को समझ कर उसका आनंद उठाना चाहिए।

वाल्डेन के एक पाठक ने तो इस पुस्तक की तुलना ही एक सरोवर से कर दी, उसे "शीतलता और ताज़गी पहुँचाने वाली" बता कर। एक अन्य ने कहा, "इसका एक-एक पृष्ठ चुलबुले हंसी-विनोद और उज्जवल विचारों से परिपूर्ण है।" दशकों बाद, *शेर्लोट्स वेब* पुस्तक के लेखक ई. बी. व्हाइट ने *वाल्डेन* को "जीवन के नृत्य में शामिल होने का आमंत्रण" की संज्ञा दी।

थोरो के लेखन ने अनेक लोगों को वनों और वन्य जीवन के संरक्षण के लिए प्रेरित किया है। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश विलियम ओ. डगलस ने कहा, "थोरो का आगमन ऐसे समय हुआ था, जब लोगों को वृक्षों में केवल इमारती लकड़ी ही दिखाई देती थी। वृक्षों पर पलते पक्षियों, उनके मधुर संगीत, और वृक्षों द्वारा होने वाले जल-संरक्षण को वे नहीं देख पा रहे थे। इस संकुचित दृष्टिकोण का विरोध इस महाद्वीप में सर्वप्रथम थोरो ने ही किया।"

जॉन मुइर, जिन्होंने राष्ट्रीय उद्यानों के गठन और वनों के संरक्षण के लिए कार्य किया, उन अनेक पर्यावरणविदों में से थे, जिन्होंने थोरो के लेखन को पढ़ा था। प्रसिद्ध जीव-वैज्ञानिक रेचल कार्सन, जिन्होंने विश्व को हानिकारक कीटनाशकों के खतरों के प्रति चेताया था, थोरो की डायरी को हमेशा अपने बिस्तर के निकट रखती थीं।

हेनरी थोरो के विचार आज के पर्यावरण संरक्षण अभियान के लिए बीज के समान थे। इस अभियान के कारण आज अमेरिका में लाखों एकड़ भूमि राष्ट्रीय उद्यानों, वनों, और वन्य-पशुओं के लिए आरक्षित कर दी गई है, और उसे किसी भी प्रकार के औद्योगीकरण या अन्य दुरूपयोग से बचा कर रखा गया है। विश्व भर में लोग वन्य पशुओं के प्राकृतिक आवास-स्थलों के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे है, जिससे कि ये पशु-पक्षी इस संसार से विलुप्त न होने पाएँ। लोग अपने आस-पड़ोस में प्रदूषण को कम करने और प्राकृतिक वातावरण को बचाए रखने के लिए भी कार्य कर रहे हैं।

अपने देहांत से कुछ पहले थोरो ने लिखा था, "प्रत्येक नगर में एक उद्यान, बल्कि कहें तो हज़ार-पांच सौ एकड़ में फैला एक छोटा-मोटा वन होना चाहिए, जहाँ से ईंधन के लिए पेड़ के एक टहनी तक न काटी जाये।" यह प्राकृतिक स्थान सभी की "एक साझा जायदाद होनी चाहिए, जिसका उपयोग लोगों की शिक्षा और मनोरंजन के लिए किया जाए।" हेनरी थोरो ने सभी अमेरिका-वासियों से इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करने का आग्रह किया था।

"हम इस नए संसार को नया ही बनाए रखें," उसने कहा। "यदि कोई व्यक्ति अपने साथियों के साथ कदम नहीं मिला पा रहा, तो इसका अर्थ यही है कि वह किसी अन्य की ताल सुन रहा है।" दूसरे शब्दों में कहा जाये, तो इंसान की अंतरात्मा की आवाज़ ही वह दूसरी ताल है, जिसे सुन कर वह अन्य लोगों से भिन्न जीवन जीने का प्रयास कर रहा है। ऐसा व्यक्ति शायद भ्रमण करने का निश्चय करे, जैसा कि थोरो के चाचा चार्ल्स ने किया था, या फिर शायद वह थोरो की तरह जंगल में रहने का प्रयत्न करे।

थोरो की अंतरात्मा ने उसे प्रकृति के समीप एक सादा जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। सही-गलत का निर्णय करने के लिए उसे अपने अंदर की आवाज़ सुनने को कहा। और उसे अपने विचारों और जानकारियों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। थोरो के जाने के पश्चात् के वर्षों में उसके शब्दों ने इस पृथ्वी को अधिक सुन्दर और शांतिपूर्ण बनाने में विशेष योगदान दिया है।